No. of Printed Pages : 3

बी.एच.डी.एफ.-101

स्नातक उपाधि कार्यक्रम

33838

सत्रांत परीक्षा

जून, 2014

बी.एच.डी.एफ.-101 : हिन्दी में आधार पाठ्यक्रम

समय : 2 घण्टे *अधिकतम अंक : 50*

नोट : सभी प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. निम्नलिखित कहावतों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनका वाक्य में प्रयोग कीजिए : 5

(क) नौ दिन चले अढ़ाई कोस

(ख) आम के आम गुठलियों के दाम

2. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** के विलोम बताइए और उनकी रचना स्पष्ट कीजिए : 5

स्वाधीन, धनी, स्वतंत्र, सापेक्ष

3. निम्नलिखित में से किसी ***एक*** विषय पर लगभग 300 शब्दों में निबंध लिखिए : 10

(क) साहित्य की उपयोगिता

(ख) साम्प्रदायिकता : एक अभिशाप

(ग) विद्यार्थी और राजनीति

(घ) सामाजिक उन्नति में परिवार की भूमिका

4. किसी पर्यटन स्थल पर ठहरने हेतु पर्यटन आवास केंद्र में कमरा बुक कराने संबंधी एक आवेदन-पत्र लिखिए । *5*

5. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और इसके आधार पर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : *10*

जीवन को विकृत न बनाकर उसे सुंदर और उपयोगी रूप देने के इच्छुक को अपने सिद्धांतों से संबंध रखने वाली अन्तर्मुखी तथा उन सिद्धांतों के सक्रिय रूप से संबंध रखने वाली बहिर्मुखी शक्तियों को पूर्ण विकास की सुविधाएँ देनी ही पड़ेंगी । वही वृक्ष पृथ्वीतल पर बिना अवलम्ब के अकेला खड़ा रहकर झंझा के प्रहारों को मलय-समीर के झोकों के समान सहकर भी हरा-भरा फल-फूल से युक्त रह सकेगा, जिसकी मूल स्थिति शक्तियाँ विकसित और सबल हैं और उसकी मूल-स्थिति दृढ़ रह सकती है जो धरातल से बाहर स्वच्छंद वातावरण में साँस लेता है । जब बहिर्मुखी शक्तियाँ भी अंतर्मुखी हो जाती हैं तब बाह्य सक्रियता नष्ट हुए बिना नहीं रहती । आज चाहे हमारी आध्यात्मिकता भीतर-ही-भीतर पाताल तक फैल गई हो, परंतु जीवन का व्यावहारिक रूप विकृत-सा होता जा रहा है । जीवन का चिह्न केवल काल्पनिक स्वर्ग में विचरण नहीं है किंतु संसार के कंटकाकीर्ण पथ को प्रशस्त बनाना भी है । जब तक बाह्य तथा आंतरिक विकास सापेक्ष नहीं बनते, हम जीना नहीं जान सकते ।

(क) अंतर्मुखी, बहिर्मुखी, झंझा शब्दों के अर्थ बताइए ।

(ख) बहिर्मुखी शक्तियों के अंतर्मुखी हो जाने से क्या होता है ?

(ग) जीवन का व्यावहारिक रूप कैसा होता जा रहा है ?

(घ) हम जीना कैसे जान सकते हैं ?

6. निम्नलिखित में से किसी ***एक*** का आशय लगभग 200 शब्दों में लिखिए : *5*

(क) विस्तृत नभ का कोई कोना;
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली ।

(ख) वैष्णव करोड़पति है । भगवान विष्णु का मंदिर है । जायदाद लगी है । भगवान सूदख़ोरी करते हैं । ब्याज से कर्ज़ देते हैं । वैष्णव दो घंटे भगवान विष्णु की पूजा करते हैं, फिर गादी-तकिए वाली बैठक में आकर धर्म को धंधे से जोड़ते हैं । धर्म धंधे से जुड़ जाए, इसी को 'योग' कहते हैं । कर्ज़ लेने वाले आते हैं । विष्णु भगवान के मुनीम हो जाते हैं ।

7. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** प्रश्नों के उत्तर लगभग 200-200 शब्दों में लिखिए : *5×2=10*

(क) 'जूठन' के प्रतिपाद्य को स्पष्ट कीजिए ।

(ख) 'पूस की रात' को यथार्थवादी कहानी क्यों कहा जाता है ? बताइए ।

(ग) परसाई जी की व्यंग्य शैली-संबंधी विशेषताओं का उल्लेख कीजिए ।

(घ) 'जीने की कला' निबंध में अभिव्यक्त नारी-समस्या पर अपने विचार व्यक्त कीजिए ।